अपने घर की तलाश में

निर्मला पुतुल

संताली संवेदना और उसके राग-बोध का परिचय बहुत दिनों तक हिन्दी प्रांतर में 'वंशी और माँदल के ही रूप में रहा आया। उस स्टीरियोटाइप को तोड़ने की एक कोशिश पहले महाश्वेता देवी के यहाँ लक्ष्य की गई और अब संताल अंचल के खास अपने कवि-स्वर उसे नितांत मौलिक जातीय रंगतों में बाँध रहे हैं। उनमें भी निर्मला पुतुल का युवा कवि-स्वर अपनी गहरी संवेदना, समाज-बोध और एक्टिविस्ट दृढ़ता के लिए अलग से सुना और पहचाना जा रहा है।

निर्मला पुतुल ने अपने पहले और द्विभाषी कविता संग्रह को नाम दिया है 'अपने घर की तलाश में' (इञाक् ओड़ाक् सेन्देरा रे)। लेकिन समकालीन हिन्दी कविता में घर जिस तरह जड़ों की ओर वापसी का रूपक बन कर आता रहा है, उससे भिन्न यहाँ घर स्त्री के 'अपने होने का अर्थ' है। वह अर्थ, जिससे उसे कत्तई-कत्तई वंचित रखा गया और जिसे पाने के लिए वह धरती के इस छोर से उस छोर तक दौड़ती-हाँफती-भागती रही है। सदियों से, निरन्तर... और जिसके बिना वह बे-जमीन है, बे-जुबान है।

निर्मला पुतुल ने अपनी कविता को अपने 'एकांत का प्रवेश-द्वार' कहा है—एक स्त्री के नहीं, स्त्री-मात्र के एकांत का प्रवेश-द्वार। वे स-प्रश्न भंगिमा के साथ काव्य-रसिक से मुखातिब होती हैं: ''तन के भूगोल से परे/ एक स्त्री के/ मन की गाँठे खोलकर/ कभी पढ़ा है/ तुमने उसके भीतर का/ खौलता इतिहास?/...बता सकते हो तुम/ एक स्त्री को स्त्री-दृष्टि से देखते/ उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?'' और फिर चुनौती के-से लहजे में कहती हैं: ''अगर नहीं/तो फिर क्या जानते हो तुम/रसोई और बिस्तर के गणित से परे/ एक स्त्री के

शेष दूसरे फ्लैप पर...

अपने घर की तलाश में

[कविताएं]

अपने घर की तलाश में

निर्मला पुतुल

अनुवाद : अशोक सिंह

रमणिका फाउंडेशन

बिटिया मुर्मू को समर्पित

अनुक्रम

- क्या तुम जानते हो/*बाडायाम?* 1
- अपने घर की तलाश में/*इञाक् ओड़ाक् सेन्देरा ने* 3
- मेरे एकांत का प्रवेश द्वार/*इञाक् निचोल रेयाक् बोलोत् दूवार* 4
- आदिवासी स्त्रियां/*आदिवासी मायजिउ* 6
- बाहामुनी/*बाहामुनी* 9
- बिटिया मुर्मू के लिए/*बिटिया मुर्मू लागित्* 10
- आदिवासी लड़कियों के बारे में कहा गया है.../
  आदिवासी कुड़ी रेयाक् कु मेन आकादा 12
- चुड़का सोरेन से/*चुड़का सोरेन* 13
- बुधन हाँसदा/*बुधान हाँसदा* 17
- कुछ मत कहो सजोनी किस्कू/*आलोगेम रोड़ा साजोनी किस्कु* 20
- पिलचू बुढ़ी से/*पिलचू बुडही* 22
- संताल परगना/*संताल परगना* 24
- आओ, मिलकर बचाएं/*हिजुक् पे जोतो कु तेबुन बाञ्चावआ* 26
- पहाड़ी स्त्री/*बुरू रे मायजिउ* 28
- पहाड़ी बच्चा/*बुरू रेन गिदरा* 29
- पहाड़ी पुरुष/*बुरू रेन बाबा होड़* 30
- तुम कहां हो माया?/*ओका रे मिनाक् मेया माया?* 31
- उतनी दूर मत ब्याहना बाबा!/*उनाक् साँगिञ बाबा आलोम गोडकाञा* 34
- मेरा कसूर क्या है?/*चेत् काना इञाक् दोष?* 37
- क्या हूं मैं तुम्हारे लिए?/*ओकोय काना़ञ आमरेन?* 40
- जंगल, नदी, पहाड़ और गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी का दुख/
  बिर, गाडा, बुरू, निचोल बुडही धारती रेयाक् दुख 41
- गंगा/*गांग नाँय* 43
- एक खुला पत्र : अपने लालबाबू के नाम/
  मित् टेन खुला़ चिट्ठी : आबोरेन लाल बाबू ञुतुम 45
- ढेपचा के बाबू/*ढेपचा आपात* 49
- मेरा सब कुछ अप्रिय है उनकी नजर में/
  इञाक् सानामात् दो बेरूच गेया उनीयाक् नोजोर रे 55
- धीरे-धीरे/*बाय-बाय ते* 57

• **एक खुला पत्र : अपने झारखंडी भाईयों के नाम/**
मित् टेन खुला चिट्ठी : इञ रेन झारखंडी बोयहा कु ञुतुम ते 59
• **एक खुला पत्र : अपने तमाम सहकर्मियों के नाम/**
मित् टेन खुला चिट्ठी : जोतो कामिया कु ञुतुम 63
• **माँझी-थान/** *माझी थान* 68
• **कहाँ गुम हो गए तुम सबके सब?/** *सानाम के सानाम ओकारे पे आंगेन एना* 70
• **सुगिया/** *सुगिया* 72
• **आओ, काली अंधेरी रात में गाएँ सांदा गीत/**
हिजुक् पे, काड़ाँङ ञुत जिन्दा रेन बुन सिरीञ मारसाल सिरीज 74
• **फिल्मी धुन, पर तोड़-मरोड़कर अपने गीतों को गाते सुनकर/**
फिल्मी राड़ रे काचा कुचा काते आबोवात् सिरिञ को आञ्जोम काते 76
• **मैं, मेरा घर और मेरी महिला-सभा/**
इञ, इञाक् ओड़ाक् आर महिला सभा 77
• **कथा : दुमका के पायताने बसे कुरूवा की/**
किसा : दुमका जांङगा सेच् रे बासाव आकान कुरूवा रेयाक् 81
• **अपने आस-पड़ोस के छोटे भाईयों से/**
इञ आडे-पासे रेन काटिच् बोयहा ठेन 84
• **एक गीत : अपनी मां के लिए, ससुराल जाने से पहले/**
मित् टेन सिरीञ : इंगाञ लागित्, जाँवाँय ओड़ाक सेनोक् लाहारे 86
• **अभी खूंटी में टांगकर रख दो मांदल/**
नितोक् दो खुन्टी रे आकाकात् में तुङदाक् 88
• **एक बार फिर/** *आरहों मित् घाव* 90
• **अपने गाँव आई रिसर्च-टीम से/**
आले आतो रे हेच् आकान को सुसारिया गाँवता साँव 92
• **घड़ा उतार तमाशा के विरूद्ध/** *घाड़ा फेड तामाशा बिरूद* 95
• **प्रश्न/** *कुकली* 98
• **उतनी ही जनमेगी निर्मला पुतुल/** *उनाक् गे को ओमोनोत्‌ओ निर्मला पुतुल* 100
• **मैं चाहती हूं/** *इञ सानाञ काना* 101
• **तुम्हें आपत्ति है/** *आपोति मेनाक् तामा* 103
• **खून को पानी कैसे लिख दूं?/** *मायाङ दो दाक् चेकातेञ ओला?* 106
• **धर्म के ठेकेदारों की ठेकेदारी/** *धोरोम रेन ठिकादार कोवात् ठिकादारी* 108
• **अपनी जमीन तलाशती बेचैन स्त्री/**
आयाक् जुमाय सेन्दरा कान बियाकुल मायजिउ 110
• **जो कुछ देखा-सुना, समझा, लिख दिया/**
जाँहाँनाक् इञ ञेल, आँञ्जोम, बुझाव केत् आ, ओलकीदाञ 111